ISBN : 978-93-93166-08-1

पुनर्जागरण काल- महात्मा गाँधी का प्रभाव

डॉ. श्रीमती मंजू बरेलिया
शोधार्थी
हिंदी विभाग,
पी जी कॉलेज ऑफ़ एक्सीलेंस,
सागर, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश

पुनर्जागरण का आन्दोलन काल में दलित चेतना का विकास आधुनिकीकरण एवं अंग्रेजीकरण के कारण हुआ। भले ही ब्रिटिष षासन ने भारतीयों को दासता की एक कभी न भूलने वाली दर्दनाक पीड़ा दी लेकिन अनजाने में ही भारतीयों को एकता के सूत्र में बाँधने की प्रेरणा भी दी। राजाराम मोहनराय के बाद उनका ब्रह्म समाज मुख्यतः दो भागों में विभाजित हो गया। पहला देवेन्द्रनाथ टैगोर का 'आदि ब्रह्म' तथा दूसरा केषव चन्द्र सेन का भारतीय ब्रह्म समाज की स्थापना की। देवेन्द्रनाथ टैगोर ने अपने आदि ब्रह्म समाज में समानता और षिक्षा पर ज्यादा जोर दिया। उन्होने कर्मकाण्ड, अंधविष्वास, छुआछूत, जातिप्रथा, अस्पृष्यता जैसी सामाजिक बुराईयों का विरोध किया। आगे चलकर गोविन्द रनाडे ने 1882 में मिसनरी कार्य प्रारंभ किए। समाज-सुधार आन्दोलनों के क्रम में 1875 में स्वामी दयानंद सरस्वती ने 'आर्यसमाज' की स्थापना की। 1897 में स्वामी विवेकानंद ने 'रामकृश्णमिषन' की स्थापना की। विवेकानंद पुरोहितवाद के विरूद्ध थे। समाज में व्याप्त छुआछूत अस्पृष्यता, ऊँच नीच व जातिप्रथा को

ISBN : 978-93-93166-08-1

वह जड़ से मिटाना चाहते थे । दलित चेतना के विकास में सबसे महत्वपूर्ण प्रयास निचली जातियों के विकास में उठे आन्दोलनों व व्यक्तिगत प्रयासों पर बल दिया ।

बाबा साहेब अम्बेडकर ने दलित आन्दोलन की षुरूआत समाज-सुधार कार्यक्रम से ही की थी, जिसमें 20 मार्च 1927 में चावदार (पहाड़) सत्याग्रह, मनुस्मृति का दहन 2 मार्च 1930 से कालाराम मंदिर सत्याग्रह आदि प्रमुख थे । परंतु षीघ्र ही उन्होने हिन्दू समाज के दलितों के प्रति व्याप्त असहिश्णुता की पहचानकर सामाजिक आन्दोलनों को पीछे रखकर दलित उत्थान के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया । 1936 में उन्होने 'इंडिपेंडेंट लेवर पार्टी' की स्थापना की । जिसका प्रमुख उद्देष्य दलितों के लिए पृथक राजनैतिक अधिकार प्राप्त करना था । उन्होने कहा कि "अनुसूचित जातियों को अपनी आवष्यकताओं, अपनी संस्था और अपने महत्व के कारण भी एक पृथक तथा विलग तत्व की उपलब्धि के लिए राजनीतिक, आर्थिक व सामाजिक अधिकारों की प्राप्ति हो, जिसके वे अधिकारी है ।"2

उक्त सम्पूर्ण समाज सुधार के बाद भी भारतीय जन में ऊँच-नीच की भावना व्याप्त रही जिसका हल किसी भी नेता संत व महात्मा के पास नहीं था । लोगों में आजादी की भावना तो कूट-कूट कर भरी थी किन्तु दलितों के साथ उठने-बैठने, खाने-पीने और सामाजिक-रिष्तों पर आपत्ति व पाबंदी बरकरार रही । गाँधी जी का जन्म एक साधारण किन्तु खाते-पीते घर में हुआ था । वे पेषे से वकील थे तथा उन्होने दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद तथा दास-प्रथा का घिनौना रूप देख लिया था । गाँधी जी षुरूआत में पक्के सनातनवादी तथा हिन्दू-वर्णव्यवस्था के समर्थक थे । लेकिन धीरे-धीरे उन्होंने महसूस किया कि दलित भी इस देष के नागरिक हैं और उन्हें भी

ISBN : 978-93-93166-08-1

उतना ही अधिकार है जितना देष में रहने वाले दूसरे व्यक्ति को केवल जाति के आधार पर उनको अधिकार से वंचित नहीं किया जा सकता । तथा छुआछूत, अस्पृष्यता, जातिप्रथा, भेदभाव एक सामाजिक बुराई है। जिसका अंत करना आवष्यक है। दलित चेतना को जाग्रत करने, उनका उत्थान करने में सफलता गाँधीजी को मिली उतनी किसी दूसरे को नहीं मिली । आजादी की लड़ाई के साथ-साथ गाँधीजी ने सामाजिक सुधारों के भी प्रयास किए इसलिए उन्होंने न केवल अस्पृष्यता का सैद्धांतिक विरोध किया। वरन् इन कुप्रथाओं के विरूद्ध उन्होंने जनमानस के बीच रहकर कार्य भी किया। उनका विचार था कि ‘‘साम्राज्य की डामरसाही‘‘ को मैं षैतानियत कहता हूँ अस्पृष्यता को भी मैं उतनी ही भयंकर षैतानियत मानता हूँ ।‘‘2 गाँधीजी ने अपने ‘हरिजन‘ नामक पत्र एवं ‘हरिजन सेवक संघ‘ नामक संस्था के माध्यम दलितोत्थान के कार्यक्रम को वैचारिक एवं व्यवाहारिक आयाम प्रदान किए। 1919 में कांग्रेस में एक प्रस्ताव पारित किया गया जिसमें कहा गया कि‘ ‘‘यह कांग्रेस भारत वासियों से आग्रह पूर्वक कहती है कि परम्परा से दलित जातियों पर जो रूकावटें चली आ रही है। इसलिए न्याय और भलमनसी का यह तकाजा है कि ये तमाम वंदिषें उठा दी जाऐं ।3

अस्पृष्यों के संदर्भ में गाँधीजी ने लिखा है कि ‘‘समाज उनका बहिश्कार करता है आर्थिक दृश्टि से उनकी दषा और भी खराब है और धार्मिक दृश्टि से उन्हें उन स्थानों में प्रवेष की अनुमति नहीं मिलती जिन्हें ईष्वर के निवास की संज्ञा दी गई है। यदि हम छुआछूत प्राकृतिक और आवष्यक है । परंतु असंख्य जातियाँ और उपजातियाँ अभिषप्त मात्र है । वर्णव्यवस्था के कारण मानव की ऊर्जा का परिक्षरण होता है और आर्थिक दृश्टि से यह उचित ही है यह (वर्णव्यवस्था) आत्म संस्कृति की विभिन्न व्यवस्थाओं का वर्गीकरण है ।‘‘4

ISBN : 978-93-93166-08-1

हिन्दू समाज श्रेणीबद्ध असमानता और विसंगतियों के आधार पर अवलंबित था। राश्ट्रीय स्तर पर गाँधीजी अकेले नेता थे जिन्होंने पारंपारिक धार्मिक प्रतीकों तथा षब्दावली को नया अर्थक देकर उसको राश्ट्रीय जागकरण का षक्तिषाली माध्यम बना दिया । गाँधीजी का दूसरा मंच अस्पृष्यों के बीच उनको अपने परंपरागत सोच और जीवन षैली में बदलाव करने के लिए प्रेरित करना था । वे अछूतों में अषिक्षा, अंधविष्वास, षराबखोरी, कुत्सित रूढ़ियों तथा उनमें व्याप्त आपसी अस्पृष्यता को समाप्त करने पर जोर दे रहे थे ।

सदियों से जातिप्रथा की त्रासदी का दंष झेल रहे दलितों को गाँधीजी ने 'हरिजन' कहकर पुकारा । इस नामकरण के संबंध में स्वयं गाँधीजी ने बताया कि ''काठियावाड़ के एक अस्पृष्य भाई ने मुझे वर्शों पहले मुझे लिखा था कि 'अन्त्यज' 'अछूत' 'अष्पृष्य' नाम से पुकारने पर उन्हें दुःख होता है । उनका दुःख में समझ सकता हूँ । उस अस्पृष्य भाई ने मुझे बताया कि भक्त कवि नरसिंह मेहता ने एक भजन में अछूत भाईयों का उल्लेख 'हरिजन' नाम से किया है । यद्यपि जो भजन उस भाई ने अपनी बात के समर्थन में मुझे भेजा था तो भी मुझे 'हरिजन' नाम बहुत प्रिया जंचा । हरिजन का अर्थ है- ''ईष्वर का भक्त'' या ईष्वर का प्यारा । ईष्वर की प्रतिज्ञा है कि दुखियों का वह वेली है, दया का सागर है, अषक्तों को षक्ति देने वाला है, निर्बल का बल है, पंग का पैर है, अंधों की आँख है, इसलिए दलित लोग उनके प्यारे होने ही चाहिए । इस दृश्टि से अछूत माने जाने वाले भाईयों के लिए 'हरिजन' षब्द सर्वथा उपयुक्त है, ऐसा मेरा विष्वास है । 5

7 नवंबर 1933 को वर्धा से प्रारंभ की गई हरिजन यात्रा, जिसे धर्म विजय यात्रा भी कहा गया । इस ऐतिहासिक यात्रा में उन्होंने हरिजनों (अछूतों) के बीच बैठने उनसे मिलने-जुलने उन्हें सम्बोधित करने और उनकी

ISBN : 978-93-93166-08-1

चेतना जगाने का ही कार्य किया ।

वह हरिजनों के घर में ही ठहरे, उनके चैकों में बैठकर भोजन और उन्हें सार्वभौम प्रेम का संदेष दिया प्रत्येक स्थान पर उन्होंने अपने निष्छल प्रेम का संदेष दिया । प्रत्येक स्थान पर उन्होंने अपने निष्छल प्रेम तथा गहरे लगाव से उनका हृदय जीता । गाँधीजी ने स्वयं उन मंदिरों में प्रवेष से परहेज किया जिन मंदिरों में हरिजनों का प्रवेष वर्जित था ।

इस आन्दोलन से दलित-उत्थान, जाति-प्रथा, अष्पृष्य, जैसी कुरीतियों पर कुठाराघात किया गया । जिससे सामाजिक रूढ़ियों से छुटकारा पाने के सषक्त प्रयास को जन्म दिया । गाँधीजी सवर्ण छात्रों से कहते थे कि भंगियों का तिरस्कार करना उतना ही अनुचित है जितना कि किसी नर्स, सर्जन या माता का तिरस्कार" क्योंकि इन सबको भी मैले को हाथ लगाना पड़ता है । गाँधीजी को अपने मिषन में कामयाब होने की भारी उम्मीद थी । वे कहते थे कि आपने संयम से काम लिया तो मेरे षरोरांत के साथ-साथ अस्पृष्यता का भी अंत निष्चित समझिये । गाँधीजी की अपीलों प्रयासों तथा जनवादी आन्दोलन का प्रभाव अवष्य पड़ा कि अछूतों के प्रति तिरस्कार की भावना पूर्णतः तो नहीं किन्तु कम जरूर हो गई । गाँधीजी के "आन्दोलन की प्रेरणा का तकाजा था कि सदियों से अछूतों के लिए वर्जनीय अनेक प्रसिद्व मंदिरों के पट अछूतों के लिए खोल दिए गए । 6

जग जीवन राम का मत है कि "छुआछूत को जनता की जो स्वीकृति प्राप्त थी वह छिन गई । एक लम्बी श्रृंखला टूट गई जो अतीत के गर्त से प्रारंभ हुई थी । उसकी कुछ कड़ियाँ बच गई परंतु कोई भी उन्हें फिर से जोड़ नहीं सकता था । 7

गाँधीजी ने भारत में दलित चेतना को जागृत करने में जो योगदान दिया है वह इस दिषा में प्रयासरत लोगों के लिए 'मील का पत्थर' है ।

ISBN : 978-93-93166-08-1

गाँधीजी ने अपने आन्दोलन से जनमानस के प्रति नई संचार क्रांति का श्री गणेष किया । दलितों को राजनीतिक प्रक्रिया में सहभागी बनाया । जनमानस के प्रति उनके लिए विष्वास उत्पन्न किया । " उन्होंने भारत के दलित निम्न वर्गों की मुक्ति के लिए जो धर्मयुद्ध चलाया उससे स्पश्ट होता है कि सामाजिक न्याय के आदर्ष के साथ उनका कितना लगाव था ।

वस्तुतः दलित चेतना की दिषा में अब तक किये गये प्रयासों में गांधीजी का योगदान सबसे ज्यादा प्रभावी व सकारात्मक रहा है । गाँधीजी पहले व्यक्ति थे जिन्होंने दलितों, महिलाओं के लिए समझौता हीन संघर्श की पहल की । और अपने अभियान को चरम स्थिति तक पहुँचाये । परवर्ती काल में भी एक व्यक्ति के रूप में कोई इन प्रयासों में उनके मुकाबले नहीं ठहरता । वस्तुतः गाँधीजी ने अपने जीवन का एक-एक क्षण हरिजन उत्थान आन्दोलन को समर्पित कर दिया ।

सन्दर्भ

1. *सिंह सहदेव: सामाजिक न्यास का संघर्श पृ. 198 आदित्य प्रकाषन इटावा (उ.प्र.) ।*
2. *उपाध्याय हरिभाऊ: बापू कथा (1920-1948) पृ. 125 सर्वसेवा संघ प्रकाषन राजघाट वाराणसी ।*
3. *उपाध्याय हरिभाऊ: बापूकथा (1920-1948) पृ. 125 सर्वसेवा संघ प्रकाषन राजघाट वाराणसी ।*
4. *रामजीवन: भारत में जातिवाद और 'हरिजन समस्या' पृश्ठ 37 राजपाल एण्ड संस कष्मीरी गेट दिल्ली ।*
5. *उपाध्याय हरिभाऊ: वापू कथा (1920-1948) पृ. 126-127 सर्वसेवा संघ प्रकाषन राजघाट वाराणसी ।*
6. *गौतम पी पाल: आधुनिक भारत पृ. 646 राजस्थान हिन्दी ग्रंथ*

ISBN : 978-93-93166-08-1

अकादमी जयपुर।

7. *रामजगजीवनः 'भारत में जातिवाद' और हरिजन समस्या पृ.सं. 40 राजपाल एण्ड संस कष्मीरी गेट दिल्ली ।*
8. *वर्मा वी.पी.: आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन पृ. 216-217, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल आगरा'2 ।*